NCERT की नई पाठ्यपुस्तक **मल्हार** पर आधारित

संजीव® रिफ्रेशर

हिन्दी

मल्हार

कक्षा-6 के विद्यार्थियों के लिए

लेखक : घनश्याम दास शर्मा

मुख्य विशेषताएँ

1. सभी पाठों का सार
2. सभी पाठों के कठिन शब्दों के अर्थ
3. काव्यांशों/गद्यांशों पर आधारित बहुवैकल्पिक एवं अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्नोत्तर
4. पाठ्यपुस्तक के सभी प्रश्नोत्तर
5. पाठ्यक्रमानुसार अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर
6. व्याकरण
7. लेखन
   - पत्र-लेखन
   - निबन्ध-लेखन
   - अनुच्छेद-लेखन
   - अपठित बोध
   - सूचना-लेखन
   - विज्ञापन-लेखन
   - संवाद-लेखन

₹ मूल्य : 250.00

प्रकाशक :

संजीव प्रकाशन, जयपुर

प्रकाशक :

संजीव प्रकाशन

धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर-3

email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com

website : www.sanjivprakashan.com

© प्रकाशकाधीन

लेजर कम्पोजिंग :

संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर

★★★★★★

वैधानिक चेतावनी

- इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं—
  email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
  पता : प्रकाशन विभाग संजीव प्रकाशन
  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर
  आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।
- इस पुस्तक में प्रकाशित किसी त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।
- प्रकाशक की अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भाग को किसी भी रूप में फोटोस्टेट, माइक्रोफिल्म, या किसी अन्य माध्यम से, या किसी सूचना पुनर्प्राप्ति प्रणाली, इलैक्ट्रॉनिक मीडिया या यांत्रिक में शामिल करना कॉपीराइट का उल्लंघन माना जायेगा।
- सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

विषय-सूची

प्रथम खण्ड—मल्हार

1.	मातृभूमि	सोहनलाल द्विवेदी	1
2.	गोल	मेजर ध्यानचंद	18
3.	पहली बूँद	गोपालकृष्ण कौल	34
4.	हार की जीत	सुदर्शन	49
5.	रहीम के दोहे	रहीम	67
6.	मेरी माँ	रामप्रसाद 'बिस्मिल'	83
7.	जलाते चलो	द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी	100
8.	सत्रिया और बिहू नृत्य	जया मेहता	121
9.	मैया मैं नहिं माखन खायो	सूरदास	144
10.	परीक्षा	प्रेमचंद	161
11.	चेतक की वीरता	श्यामनारायण पाण्डेय	183
12.	हिंद महासागर में छोटा-सा हिन्दुस्तान	रामधारी सिंह 'दिनकर'	196
13.	पेड़ की बात	जगदीशचंद्र बसु	215

द्वितीय खण्ड—व्याकरण भाग

1.	भाषा एवं व्याकरण	229
2.	वर्ण-विचार	232
3.	शब्द विचार	235
4.	संज्ञा	238
5.	संज्ञा का विकारक तत्त्व : लिंग	242
6.	संज्ञा का विकारक तत्त्व : वचन	247
7.	संज्ञा का विकारक तत्त्व : कारक	251
8.	सर्वनाम	255
9.	विशेषण	258
10.	क्रिया	263
11.	काल	267
12.	क्रियाविशेषण	270

13.	संबंधबोधक अव्यय	273
14.	समुच्चयबोधक अव्यय	275
15.	विस्मयादिबोधक अव्यय	277
16.	उपसर्ग	279
17.	समास	282
18.	प्रत्यय	285
19.	संधि	288
20.	तत्सम-तद्भव	291
21.	विलोम शब्द	293
22.	पर्यायवाची/समानार्थी	296
23.	युग्म-शब्द/श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द	299
24.	एकार्थी शब्द व अनेकार्थी शब्द	302
25.	समानार्थक/एकार्थक शब्द	305
26.	एकल शब्द	308
27.	शुद्ध शब्द एवं अशुद्ध वाक्य	311
28.	वाक्य परिचय	319
29.	विराम चिन्ह	323
30.	मुहावरे	327
31.	कहावतें या लोकोक्तियाँ	331

तृतीय खण्ड—रचना-भाग

1.	पत्र-लेखन	334
2.	निबन्ध-लेखन	345
3.	अनुच्छेद-लेखन	366
4.	अपठित बोध	370
5.	सूचना-लेखन	384
6.	विज्ञापन-लेखन	387
7.	संवाद-लेखन	392

1 मातृभूमि

—सोहनलाल द्विवेदी

सोहनलाल द्विवेदी
(1906-1988)

कवि परिचय—मातृभूमि कविता को हिंदी के प्रसिद्ध कवि सोहनलाल द्विवेदी जी ने लिखा है। उनका जन्म आज से लगभग सवा सौ साल पहले 22 फरवरी, 1906 को उत्तर प्रदेश के फतेहपुर में हुआ था। उस समय अंग्रेजों का भारत पर आधिपत्य था। उन्होंने अपनी लेखनी से अंग्रेजों का विरोध किया। उनकी लेखनी का सबसे प्रिय विषय था 'देशभक्ति'। भारत के गौरव का गान करना उन्हें बहुत प्रिय था। हिन्दी के पहले राष्ट्रीय कवि। बाल साहित्य के रचनाकार। काव्य में राष्ट्रीयता और देशप्रेम का स्वर ओजपूर्ण। 1 मार्च, 1988 को उत्तर प्रदेश के कानपुर में इस ओजपूर्ण राष्ट्रीय कवि का सूर्य अस्त हो गया। उनकी कुछ चर्चित रचनाएँ हैं—'पूजागीत', 'विषपान', 'वासंती', 'चित्र', 'भैरवी', 'बढ़े चलो, बढ़े चलो', 'कोशिश करने वालों की हार नहीं होती' आदि। वह 'अधिकार' और 'बालसखा' पत्रिकाओं के सम्पादक रहे।

कविता का सारांश—'मातृभूमि' कविता देश के सांस्कृतिक, धार्मिक एवं ऐतिहासिक महत्त्व को प्रकट करती हुई एक सार्थक कविता है जिसमें हिमालय पर्वत के गौरव का गान है। धार्मिक महत्त्व को बताती त्रिवेणी (गंगा, यमुना, सरस्वती) नदियों की अनुपम छटा है। धन-धान्य से भरपूर जन्मभूमि को प्रणाम है। जहाँ के खेत फसलों के रूप में सोना उगलते हैं। प्राकृतिक सौन्दर्य की छटा निराली है। बाग-बगीचों में पेड़ फलों से लदे हैं। कोयल, चिड़िया तथा अन्य पक्षियों के मधुर गान हैं। कवि के अनुसार मातृभूमि, जन्मभूमि के साथ-साथ कर्मभूमि एवं धर्मभूमि भी है। जहाँ मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम एवं सीता का जन्म हुआ है। जहाँ पर कृष्ण ने बाँसुरी बजाते हुए गीता का पवित्र संदेश दिया है। गौतम बुद्ध ने दया, प्रेम एवं अहिंसा का पाठ सिखाकर इस भारतवर्ष का मान पूरे विश्व में बढ़ाया है। कवि के अनुसार राम, कृष्ण एवं बुद्ध की जन्मभूमि, कर्मभूमि एवं धर्मभूमि हम सबकी मातृभूमि है जिसका यश पूरे विश्व में अपना परचम लहरा रहा है।

कविता की व्याख्या एवं अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. ऊँचा खड़ा हिमालय
आकाश चूमता है,
नीचे चरण तले झुक,
नित सिंधु झूमता है।

गंगा यमुन त्रिवेणी
नदियाँ लहर रही हैं,
जगमग छटा निराली,
पग पग छहर रही हैं।
वह पुण्य-भूमि मेरी,
वह स्वर्ण-भूमि मेरी।
वह जन्मभूमि मेरी
वह मातृभूमि मेरी। **(पृष्ठ 1)**

कठिन शब्दार्थ—चूमता = छूना। **चरण** = पैर। **सिंधु** = समुद्र। **त्रिवेणी** = गंगा, यमुना, सरस्वती का संगम। **जगमग** = चमकदार। **छहर** = फैलना। **पुण्य** = पवित्र। **स्वर्ण** = सोना।

प्रसंग—प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य-पुस्तक मल्हार की कविता मातृभूमि से ली गई हैं। इस कविता के रचयिता प्रसिद्ध कवि सोहनलाल द्विवेदी हैं। कवि ने भारत के प्राकृतिक सौन्दर्य और समृद्धि का वर्णन किया है।

व्याख्या—कवि का कहना है कि भारत के उत्तर दिशा में हिमालय पर्वत की ऊँची-ऊँची चोटियाँ आकाश को छूती हुई प्रतीत होती हैं। विश्व में सबसे ऊँचा हिमालय पर्वत भारत के गौरव का प्रतीक है। दक्षिण में स्थित हिंद महासागर भारत माँ के पैरों को स्पर्श करता हुआ अपने भाग्य पर इतराता है।

भारत ऐसा पवित्र देश है जहाँ गंगा, यमुना एवं सरस्वती जैसी पवित्र नदियों का संगम (प्रयागराज में) अपने आप होता है। जिसका अद्‌भुत सौन्दर्य चारों ओर चमकता प्रतीत होता है। कवि गर्व से कहता है कि यह भूमि न केवल पवित्र भूमि है, बल्कि सोने जैसी चमकती मेरी जन्मभूमि और मातृभूमि भी है।

बहुविकल्पात्मक प्रश्न—

1. हिमालय कैसा खड़ा है?
   (अ) छोटा (ब) ऊँचा (स) टेढ़ा (द) सीधा
2. त्रिवेणी किसका संगम है?
   (अ) तीन समुद्रों का (ब) तीन नदियों का (स) तीन पहाड़ों का (द) तीन देशों का
3. कवि अपनी भूमि को क्या कहता है?
   (अ) परदेश (ब) पराई भूमि (स) निर्जन भूमि (द) मातृभूमि

उत्तर—1. (ब), 2. (ब), 3. (द)।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न—

प्रश्न 1. हिमालय किसे चूमता है?
उत्तर—हिमालय आकाश को चूमता है।
प्रश्न 2. नदियाँ क्या कर रही हैं?
उत्तर—नदियाँ लहरें ले रही हैं और जगमग छटा बिखेर रही हैं।

प्रश्न 3. कविता में भारत भूमि को किस प्रकार वर्णित किया गया है?

उत्तर—कविता में भारत भूमि को पुण्यभूमि और स्वर्णभूमि के रूप में वर्णित किया गया है।

प्रश्न 4. 'ऊँचा खड़ा हिमालय' में विशेषण शब्द कौनसा है?

उत्तर—ऊँचा।

2. झरने अनेक झरते
जिसकी पहाड़ियों में,
चिड़ियाँ चहक रही हैं,
हो मस्त झाड़ियों में।
अमराइयाँ घनी हैं,
कोयल पुकारती है,
बहती मलय पवन है,
तन-मन सँवारती है।
वह धर्मभूमि मेरी,
वह कर्मभूमि मेरी।
वह जन्मभूमि मेरी
वह मातृभूमि मेरी। **(पृष्ठ 1-2)**

कठिन-शब्दार्थ—झरने = पहाड़ या किसी ऊँचे स्थान से जल की धाराएँ गिरना। **चहक** = चिड़िया की चह-चह की आवाज। **झाड़ियों** = कंटीले या छोटे-छोटे पौधों के समूह। **अमराई** = आम का बाग या उद्यान। **मलय पवन** = मलय पर्वत की ओर से चलने वाली हवा जिसमें सुगन्ध-सी होती है। **सँवारती** = सौन्दर्य बढ़ाती, सजना-सजाना। **धर्मभूमि** = धर्म की भूमि। **कर्मभूमि** = कार्यों की भूमि।

प्रसंग—प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'मल्हार' की सोहनलाल द्विवेदी द्वारा रचित कविता 'मातृभूमि' से लिया गया है। इसमें मातृभूमि के पहाड़, झरने, बाग-बगीचे एवं धर्म-कर्म भूमि के बारे में बताया गया है।

व्याख्या—मेरी मातृभूमि भारत में यहाँ के पहाड़ी क्षेत्रों में अनेक झरने गिरते रहते हैं एवं छोटे-छोटे पौधों अर्थात् झाड़ियों पर मस्ती से चिड़ियाँ चहचहा रही हैं। यह सौन्दर्य मन को आनन्दित करता है।

आम के बगीचों में कोयलों की मधुर स्वर (कूक) सुनाई देती है। मलय पर्वत की ओर से सुगन्धित हवा प्रवाहित होती है जो मेरी मातृभूमि के तन-मन को सजाती-सँवारती है।

इस प्रकार से यह मातृभूमि मेरी धर्मभूमि, कर्मभूमि एवं जन्मभूमि है जो मुझे अपने धर्म एवं कर्म का बोध करवाकर कर्त्तव्य पालन करना सिखाती है।

बहुविकल्पात्मक प्रश्न—

1. मलय पवन किसको प्रभावित करती है?
(अ) केवल तन को (ब) केवल मन को (स) तन-मन दोनों को (द) किसी को नहीं
2. कोयल किसमें पुकारती है?
(अ) पहाड़ियों में (ब) झाड़ियों में (स) खेतों में (द) अमराइयों में

3. 'वह जन्मभूमि मेरी' में 'मेरी' कौनसा शब्द है?

(अ) संज्ञा (ब) सर्वनाम (स) विशेषण (द) क्रिया

उत्तर—1. (स), 2. (द), 3. (ब)।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न—

प्रश्न 1. कविता में किस प्रकार की पहाड़ियों का उल्लेख किया गया है?

उत्तर—कविता में झरनों से युक्त पहाड़ियों का उल्लेख किया गया है।

प्रश्न 2. 'तन-मन सँवारती है' पंक्ति का क्या तात्पर्य है?

उत्तर—इसका अर्थ है कि यहाँ की पवित्र हवा शरीर और मन दोनों को शुद्ध और प्रसन्न कर देती है।

प्रश्न 3. देशप्रेम की भावना किस प्रकार व्यक्त की गई है?

उत्तर—कवि ने भारत की सुंदरता, पवित्रता और सांस्कृतिक गरिमा का वर्णन कर यह दर्शाया है कि उसे अपने देश से बहुत प्रेम है।

प्रश्न 4. 'वह जन्मभूमि मेरी' में 'वह' कौन-सा शब्द है?

उत्तर—संकेतवाचक सर्वनाम।

3. जन्मे जहाँ थे रघुपति,
जन्मी जहाँ थी सीता,
श्रीकृष्ण ने सुनाई,
वंशी पुनीत गीता।
गौतम ने जन्म लेकर,
जिसका सुयश बढ़ाया,
जग को दया सिखाई,
जग को दिया दिखाया।
वह युद्ध-भूमि मेरी,
वह बुद्ध-भूमि मेरी।
वह मातृभूमि मेरी,
वह जन्मभूमि मेरी। **(पृष्ठ 2)**

कठिन-शब्दार्थ—**रघुपति** = रघुकुल के राजा श्रीराम। **वंशी** = बाँसुरी या मुरली। **पुनीत** = पवित्र किया हुआ या शुद्ध। **सुयश** = सुन्दर यश, सुकीर्ति, प्रसिद्धि। **जग** = संसार या विश्व। **दिया** = दीपक या प्रकाश। **युद्ध-भूमि** = युद्ध की भूमि या संघर्ष की भूमि। **बुद्ध-भूमि** = ज्ञान की भूमि या शान्तिपूर्ण या शुद्ध भूमि।

प्रसंग—प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'मल्हार' की सोहनलाल द्विवेदी द्वारा रचित कविता 'मातृभूमि' से लिया गया है। इसमें कवि द्वारा मातृभूमि पर जन्म लेने वाले देवी-देवताओं एवं महापुरुषों के बारे में बताया गया है।

व्याख्या—मेरी मातृभूमि वही है जहाँ पर रघुवंशी राजा श्रीराम एवं जनक नन्दिनी सीता माता ने जन्म लिया है। यहीं पर जन्म लेकर श्रीकृष्ण ने मधुर बाँसुरी बजाई एवं पवित्र गीता का उपदेश दिया है।

यहाँ मेरी मातृभूमि में गौतम बुद्ध ने जन्म लेकर भारत की सुकीर्ति को विश्व में बढ़ाया। उन्होंने संसार को